ट्रेड यूनियनें और सर्वहारा क्रांति - II
चीन में नव–जनवादी क्रांति व समाजवादी क्रांति के सबक

लाल सलाम के 23वें अंक में हमने रूसी क्रांति और समाजवाद के निर्माण में ट्रेड यूनियनों, मजदूर वर्ग और बोल्शेविक पार्टी की भूमिका पर विचार किया था। इसी क्रम में इस बार हम चीनी क्रांति के दौरान चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, ट्रेड यूनियनों और मजदूर वर्ग की भूमिका की चर्चा कर रहे हैं।

क्रांति पूर्व चीनी समाज अर्द्ध–औपनिवेशिक और अर्द्ध–सामन्ती समाज था। 1931 में जापान द्वारा एक हिस्सा कब्जा कर लेने के बाद चीनी समाज औपनिवेशिक, अर्द्ध–औपनिवेशिक, अर्द्ध–सामन्ती हो गया था। चीनी समाज की विशिष्टता यह थी कि वह कई युद्ध सरदारों द्वारा अलग–अलग इलाकों में शासित था तथा उनके बीच युद्ध चलते रहते थे। दूसरी विशिष्टता यह थी कि चीनी पूंजीपति वर्ग की पार्टी कोमिंतांग युद्ध सरदारों की सत्ता के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष में लगी हुयी थी। इन विशिष्टताओं तथा अन्य विशिष्टताओं के चलते चीनी क्रांति ने अलग रूप एवं रास्ता अख्तियार किया। इसके पहले की जो पूंजीवादी जनवादी क्रांतियां हुई थीं, सभी ने आम विद्रोह का रास्ता अख्तियार किया था, लेकिन चीन की पूंजीवादी जनवादी क्रांति ने दीर्घकालीन लोक युद्ध का रास्ता अख्तियार किया था।

कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल ने 1920 में राष्ट्रीय व औपनिवेशिक प्रश्न पर विचार करते हुए यह स्थापित किया था कि औपनिवेशिक देशों में मजदूर वर्ग बहुत कमजोर स्थिति में है और कम्युनिस्ट पार्टियां अभी बन ही रही हैं, इसलिए इन देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों को राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल होना चाहिए तथा वहां के राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ संश्रय बना कर चलना चाहिए। अक्टूबर क्रांति के बाद राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन विश्व सर्वहारा क्रांति का हिस्सा हो गया था। इसके पहले वह पूंजीवादी जनवादी क्रांतियों का हिस्सा था।

इसी आधार पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी लम्बे जद्दोजहद के बाद नव जनवादी क्रांति की अवधारणा पर पहुंची। प्रस्तुत लेख में चीनी मजदूर वर्ग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नव–जनवादी क्रांति और बाद में समाजवादी क्रांति व निर्माण में निभाई गयी भूमिका की चर्चा की जा रही है।

I

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की शुरुआत मजदूर वर्ग के बीच काम करने से हुई थी। 4 मई आंदोलन के दौरान शंघाई के मजदूरों ने व्यापक पैमाने पर हिस्सेदारी की थी। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के पहले से शंघाई, ग्वांगजू, बीजिंग, चांगशा, वूहान और जीनान में कम्युनिस्ट ग्रुप बन गये थे। जगह–जगह मजदूरों के क्लब गठित होने लगे थे। मजदूरों के बीच मार्क्सवाद का प्रचार–प्रसार करने तथा उनको राजनीतिक तौर पर प्रशिक्षित करने के लिए पत्रिकाओं व अन्य प्रकाशनों का काम शुरू हो चुका था। वस्तुतः रूस की अक्टूबर क्रांति की तोपों की गरज के साथ अन्य देशों की तरह चीन में भी मार्क्सवाद–लेनिनवाद पहुंचा था।

1910 में 4 मई आंदोलन साम्राज्यवाद–विरोधी आंदोलन था। यह बीजिंग के छात्रों से शुरू हुआ था लेकिन जल्द ही इसका केन्द्र शंघाई बन गया। इसके बाद यह समूचे चीन में फैल गया। इसमें मजदूर, छात्र, व्यापारी और अन्य सामाजिक हिस्से बड़े पैमाने पर शामिल हुए थे। इस आंदोलन के दौरान मजदूरों की विशाल राजनीतिक हड़तालें हुईं। इसने मजदूर वर्ग की व्यापक शक्ति का अहसास भी कराया। 1920 तक यांत्रिकों तथा प्रेस व सूती कपड़ा उद्योग के मजदूरों की ट्रेड यूनियनों की स्थापना हो चुकी थी।

जुलाई, 1921 में जब चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई तो इसका मजदूर वर्ग के बीच एक आधार बन चुका था। अपनी स्थापना के तुरंत बाद ही इसने मजदूर सचिवालय की स्थापना की। शंघाई इसका सदर मुकाम बनाया गया। देश के अलग–अलग शहरों में इसकी शाखायें कायम की गयीं। श्रम सचिवालय ने ट्रेड यूनियन आंदोलन के दिशा निर्देश के बतौर वर्ग–संघर्ष एवं राजनीतिक संघर्ष को प्राथमिकता देने पर शुरू से ही जोर दिया। इसके अतिरिक्त पेशागत आधार पर यूनियनें गठित करने के बजाय औद्योगिक आधार पर यूनियनें गठित करने का बुनियादी सिद्धान्त रखा गया। इस आधार पर एक उद्यम के सभी मजदूरों को एक बुनियादी ट्रेड यूनियन में संगठित करने की कोशिश की जाती थी तथा उसी उद्योग के सभी ट्रेड यूनियनों को मिलाकर देशव्यापी ट्रेड यूनियन खड़ी की जानी थी। इस तरह पेशागत यूनियनों की संकीर्णता के विरुद्ध शुरू से ही संघर्ष किया गया।

कम्युनिस्ट पार्टी मजदूरों के बीच काम करने के तरीके के बतौर मजदूरों के क्लब गठित करती थी। इन क्लबों में उन्हें यूनियन बनाने तथा राजनीतिक संघर्षों में भाग लेने के लिए तैयार किया जाता था। मजदूरों के बीच काम करने के लिए वे उनको व उनके आश्रितों के लिए स्कूल चलाते थे। इसके अतिरिक्त वे मजदूरों के पहले से चले आ रहे संगठनों के भीतर काम करते थे। इससे उनको यांगजी इलाके में हड़तालों में शामिल होकर कुछ ट्रेड यूनियनों को कायम करने में सफलता मिली।

मजदूर सचिवालय की स्थापना के बाद हॉंगकॉंग के नाविकों की हड़ताल एक महत्वपूर्ण हड़ताल थी। यह हड़ताल चीनी नाविकों के साथ होने वाले भेदभाव के विरुद्ध थी। विदेशी जहाजरानी कम्पनियों में विदेशी नाविकों के मुकाबले चीनी नाविकों की मजदूरी पाचवां हिस्सा थी। जहाजरानी कम्पनी के मालिकों तथा हॉंगकॉंग सरकार द्वारा दमन के तमाम हथकंडों, फूट डालने की कोशिश नाकाम करते हुए यह हड़ताल लगभग 8 सप्ताह चली। इस हड़ताल को समूचे चीन के मजदूर वर्ग से व्यापक समर्थन मिला। इस हड़ताल ने ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को मांगें मानने के लिए मजबूर कर दिया। इस हड़ताल की सफलता के बाद चीन के मजदूर वर्ग के संघर्षों में बहुत तेजी से बढ़ोत्तरी हुई।

बढ़ते मजदूर आंदोलन के मद्देनजर चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने समूचे देश के ट्रेड यूनियन आंदोलन को और ज्यादा मजबूती प्रदान करने के लिए चीनी मजदूर सचिवालय के तत्वावधान में एक राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में 2 लाख 70 हजार ट्रेड यूनियन सदस्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले 162 प्रतिनिधि शामिल हुए। इस सम्मेलन में कम्युनिस्ट पार्टी, कोमिंतांग, अराजकतावादियों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त ऐसे लोग भी प्रतिनिधि थे जो किसी भी पार्टी के सदस्य नहीं थे। इस सम्मेलन में अखिल चीन ट्रेड यूनियन फेडरेशन के गठन से पहले मजदूर सचिवालय को राष्ट्रीय सम्पर्क केन्द्र के रूप में काम करने की मान्यता प्रदान की गयी। सम्मेलन ने मजदूर वर्ग की देशव्यापी एकता को गति दी तथा उस समय चलने वाले मजदूर आंदोलन को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान किया।

इस सम्मेलन के बाद कम्युनिस्ट पार्टी की दूसरी कांग्रेस जून, 1922 में हुई। इस कांग्रेस में यह तय किया गया कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ट्रेड यूनियन आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करेगी। इसी कांग्रेस में कोमिंतांग के साथ संयुक्त मोर्चा गठित करने का फैसला

लिया गया। ट्रेड यूनियन गतिविधियों को निदेशित करने के लिए मजदूरों के विभाग की स्थापना की गयी। इस विभाग को मजदूर सचिवालय के साथ घनिष्ठ सम्पर्क में काम करना था।

पार्टी की दूसरी कांग्रेस के बाद मजदूर सचिवालय ने और ज्यादा यूनियनों एवं हड़तालों को संगठित करना शुरू कर दिया। हू पेई, हुनान और उत्तरी व मध्य चीन के रेल मजदूरों के बीच विशेष तौर पर बड़ी सफलतायें मिलीं। शंघाई में मजदूर आंदोलन के व्यापक दमन के चलते मजदूर सचिवालय और पार्टी केन्द्र बीजिंग चला गया।

ट्रेड यूनियन गतिविधियों को उस समय गम्भीर धक्का लगा जब बीजिंग–हानखओ के रेल मजदूरों के आंदोलन को 7 फरवरी, 1923 में उत्तरी चीन के युद्ध सरदार ऊ पेई फू द्वारा साम्राज्यवादियों की मदद से व्यापक दमन का शिकार होना पड़ा। ऊ ने बीजिंग–हानखओ रेल मजदूर ट्रेड यूनियन के स्थापना सम्मेलन को रोकने की कोशिश की थी। इसके बावजूद सम्मेलन हुआ और आम यूनियन स्थापित हुई तथा ऊ के विरुद्ध तत्काल आम हड़ताल का आह्वान किया गया। ऊ ने हड़ताल को तोड़ने तथा यूनियन के दफ़्तरों को बंद करने के लिए दमन का सहारा लिया। 7 फरवरी 1923 को सैनिकों द्वारा अनेक रेल स्टेशनों पर मजदूरों पर गोलियां चलायी गयीं और उन्हें गिरफ़्तार किया गया। इसमें मजदूर नेताओं को वार्ता करने के बहाने उन पर आक्रमण करने की योजना बनायी गयी। मजदूर नेताओं के ट्रेड यूनियन मुख्यालय पहुंचने से पहले ही निहत्थे मजदूरों पर गोलियां चलायी गयीं। इसमें 37 मजदूर मारे गये तथा 200 से ज्यादा घायल हुए। इसी तरह के जुल्म कई शहरों में ढाये गए। जगह–जगह ट्रेड यूनियनों के दफ़्तरों को बंद कर दिया गया।

मजदूर आंदोलन का यह उभार करीब 13 महीने तक रहा और इसकी चरम परिणति बीजिंग–हानखओ रेल मजदूरों की विशाल राजनीतिक हड़तालों से हुई। 7 फरवरी 1923 के व्यापक नरसंहार के बाद इस पहले उभार में गिरावट आयी। इस दौरान छोटी–बड़ी 100 हड़तालें हुई जिसमें 3 लाख से ज्यादा मजदूरों ने भाग लिया। इस तात्कालिक गिरावट के बाद फिर से मजदूर आंदोलन में नया उभार आने लगा।

जून 1923 में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की तीसरी कांग्रेस हुई। इसी कांग्रेस में डा. सुन यात सेन के नेतृत्व में चलने वाली कोमिंतांग पार्टी के साथ संयुक्त मोर्चा गठित करने का सवाल केन्द्रीय बहस का मुद्दा था। इसमें छन त्यू–शू की आत्म समर्पणवादी कार्यदिशा के विरुद्ध संघर्ष हुआ। छन त्यू–शू का मानना था कि पूंजीवादी जनवादी क्रांति का नेतृत्व पूंजीपति वर्ग को करना चाहिए जबकि मजदूर वर्ग को इसके अनुपूरक की भूमिका निभानी चाहिए। दूसरी तरफ, एक ऐसे गलत विचार के विरुद्ध भी संघर्ष करना पड़ा जो यह मानता था कि कम्युनिस्ट पार्टी को कोमिंतांग के साथ कोई संयुक्त मोर्चा नहीं बनाना चाहिए। इस विचार का प्रवक्ता चांग क्व–थाओ था। इस कांग्रेस ने दोनों तरह के भटकावों की आलोचना की। इस कांग्रेस में अपने पार्टी सदस्यों के एक हिस्से को कोमिंतांग पार्टी में निजी हैसियत से शामिल होने के बारे में फैसला लिया गया।

इस कांग्रेस से थोड़ा पहले डा. सुन यात सेन ने क्वांगतुंग में क्रांतिकारी सरकार का गठन कर लिया था। इस सरकार के गठन में कम्युनिस्ट पार्टी ने सहयोग किया था उस समय चीन में अलग–अलग युद्ध सरदार थे जो आपस में युद्धरत रहते थे। विशेषतौर पर उत्तरी चीन में युद्ध सरदारों के बीच लड़ाइयां चल रही थीं। साम्राज्यवादी आक्रमण का भी चीन शिकार था।

साम्राज्यवादी आक्रमण को खत्म करने तथा युद्ध सरदारों की सत्ताओं को हटाने के उद्देश्य से कोमिंतांग की प्रथम राष्ट्रीय कांग्रेस जनवरी, 1924 में सम्पन्न हुई। इस कांग्रेस में तीन बुनियादी नीतियों को प्रतिपादित किया गया। वे ये थीं : पहला, सोवियत संघ के साथ मैत्री, दूसरा, कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सहयोग और तीसरा, मजदूरों और किसानों की सहायता। इस कांग्रेस में कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों को व्यक्तिगत हैसियत से कोमिंतांग में शामिल होने का प्रस्ताव पारित किया गया।

इस कांग्रेस के बाद सोवियत संघ और चीन के बीच एक मैत्री संधि हुई जिसमें जारशाही रूस के जमाने के दौरान हुई रूस और चीन के बीच तमाम असमान संधियों को रद्द कर दिया गया। इस संधि को करने में बीजिंग की सरकार को फायदा था, इसलिए उसने इसे स्वीकार कर लिया। इसी कांग्रेस के बाद, 1924 में ही एक फौजी अकादमी की स्थापना हुई। इसको सोवियत संघ की लाल सेना की तर्ज पर गठित किया गया था। यह एक राष्ट्रीय क्रांतिकारी सेना थी। इसमें भी कम्युनिस्ट–कोमिंतांग सहयोग था।

इस कांग्रेस के बाद मजदूर आंदोलन में फिर से उभार की शुरुआत होने लगी। सूती कपड़ा तैयार करने वाली मिलों में जापानी मिल मालिकों के विरुद्ध संघर्ष तेज हो गया। शंघाई में फरवरी, 1925 को विशाल हड़ताल का आयोजन हुआ। इस हड़ताल में शंघाई स्थित सभी जापानी मिलों के मजदूर शामिल हुए। इस आंदोलन को भयभीत करने के लिए जापान ने अपने युद्धपोत चीन की ओर रवाना कर दिये। संगठनों की बढ़ती ताकत से भयभीत होकर उन पर प्रतिबंध लगाने तथा संगठनकर्ताओं को बर्खास्त करने का निर्णय लिया। शंघाई और छिंगताओ में मजदूरों पर गोलियां चलाई गईं। इस दमन के विरुद्ध समूचे चीन में रोष और तेज हो गया।

इसी पृष्ठभूमि में और आगे आने वाले साम्राज्यवाद विरोधी तूफान को ध्यान में रखकर पार्टी के नेतृत्व तथा चीन के सबसे बड़े मजदूर फेडरेशनों के तत्वावधान में दूसरी राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस का आयोजन किया गया। इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि इसमें ट्रेड यूनियनों के अखिल चीन फेडरेशन (ACFTU) का गठन किया गया तथा इसको अंतर्राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन–लाल ट्रेड यूनियन – से संबद्ध करने का फैसला लिया गया।

ट्रेड यूनियनों के अखिल चीन फेडरेशन (All China Federation Of Trade Unions) की जिम्मेदारियों में से निम्नलिखित थीं : (1) समूचे चीन में मजदूर संगठनों को विकसित करना : (2) ट्रेड यूनियन आंदोलन को एकजुट करना : (3) यूनियनों की सांगठनिक व्यवस्था में सुधार लाना : (4) यूनियनों की सभी गतिविधियों को निदेशित करना : (5) यूनियनों के भीतर और विभिन्न यूनियनों के बीच सभी विवादों को सुलझाना : (6) मजदूरों के संघर्ष के लक्ष्यों को तय करना और उनका प्रचार करना : (7) विश्व के मजदूरों के सहकार में चीनी मजदूरों का प्रतिनिधित्व करना : (8) मजदूरों के शिक्षा के स्तर को उठाना तथा यूनियनों के बीच सहयोग करना और (9) मजदूरों के हितों की रक्षा करना।

इसी कांग्रेस में यह स्पष्ट किया गया कि मजदूर वर्ग को राष्ट्रीय जनवादी क्रांति में भाग लेना चाहिए।

दूसरी कांग्रेस के बाद, शंघाई में जापानी और ब्रिटिश मालिकों के विरुद्ध हड़तालों का एक नया उभार शुरू हो गया। इसकी परिणति 30 मई, 1925 की घटना में हुई जो बाद में क्वांगझाऊ में शाकी नरसंहार में परिणत हुआ तथा फैलकर हॉगकॉग–क्वांगझाऊ हड़तालों के सिलसिले में परिणत हो गया। इन हड़तालों के सिलसिले की शुरुआत मई की शुरू में जापानी सूती मिलों के मजदूरों के प्रदर्शन से हुई। ये मजदूर मजदूरी में बढ़ोत्तरी तथा यूनियन बनाने के अधिकार की मांग कर रहे थे इस दौरान हड़ताली मजदूर नेता को एक जापानी फोरमैन ने जान से मार दिया। इससे न सिर्फ हड़ताली मजदूरों के अंदर बल्कि समूचे चीन में गुस्से की लहर फैल गयी। हड़ताली मजदूरों के समर्थन में जगह–जगह प्रदर्शन हुए। शंघाई में अब न सिर्फ जापानी मिल मालिक बल्कि सभी विदेशी मालिकों को निशाना बनाया गया। 30 मई को एक साम्राज्यवाद विरोधी प्रदर्शन आयोजित किया गया। उस दिन जब 10,000 प्रदर्शनकारी नानकिंग मार्ग पर प्रदर्शन कर रहे थे तो ब्रिटिश पुलिस ने निहत्थे लोगों पर गोलियां चलाई, जिसमें लगभग एक दर्जन प्रदर्शनकारी मौके पर मारे गये और 50 से अधिक गिरफ़्तार किये गये। क्वांगझाऊ में ब्रिटिश और ंसीसी सैनिकों ने शामियान शाकी नरसंहार को अंजाम दिया। इसके बाद कैण्टन (क्वांगझाऊ), हॉगकॉग में ब्रिटिश और सभी विदेशी स्वार्थों के विरुद्ध व्यापक हड़ताल और बहिष्कार आयोजित किया गया। हॉगकॉग

के कारोबार ठप्प हो गये। मजदूर यूनियनों की संगठित कार्यवाही की ताकत का अहसास सभी को हो गया। सभी यूनियनें और फेडरेशन तेजी से बढ़ने लगे तथा मजदूरों की ट्रेड यूनियनों का प्रभाव तथा महत्व बढ़ गया।

जून, 1925 से लेकर दिसम्बर 1926 तक सोलह महीने तक चलने वाली हॉगकॉग की हड़ताल ने एक तरफ तो ब्रिटिश साम्राज्यवाद की राजनीतिक प्रतिष्ठा को धूल में मिला दिया था और दूसरी तरफ यह चीनी क्रांति के इतिहास की एक महान घटना थी। यह हड़ताल विश्व भर के मजदूर वर्ग की हड़तालों के इतिहास में एक उल्लेखनीय घटना थी।

जब हड़तालों का यह सिलसिला उतार पर जा रहा था, उसी समय, ट्रेड यूनियनों के अखिल चीन फेडरेशन की तीसरी कांग्रेस का आयोजन किया गया। मजदूरों की इस कांग्रेस में कोमिंतांग के उत्तरी अभियान के समर्थन का संकल्प व्यक्त किया गया। दक्षिण में स्थित कोमिंतांग की राष्ट्रीय सरकार का यह एक सैनिक अभियान था जो उत्तरी चीन को युद्ध सरदारों के चंगुल से मुक्त करके देश को एकजुट करने के उद्देश्य से चलाया जा रहा था। उत्तरी अभियान के दौरान मजदूरों ने हर तरह से राष्ट्रीय सेना की मदद की। शंघाई में उत्तरी अभियान में लगी राष्ट्रीय सेना के पहुंचने से पहले शंघाई पर मजदूर वर्ग ने कब्जा कर लिया था। इसी प्रकार क्वांगझाऊ में राष्ट्रीय सरकार के गठन में कम्युनिस्ट पार्टी और मजदूर वर्ग ने भूमिका निभायी थी।

इसी समय कोमिंतांग के अंदर दक्षिणपंथी ताकतें अपने को मजबूत करती जा रही थीं। वे मजदूर आंदोलन तथा हुनान व अन्य इलाकों में चलने वाले किसान आंदोलनों से भयभीत थीं। वे कोमिंतांग के अंदर साजिशें कर रही थीं। युद्ध सरदारों से सांठ–गांठ में लगी थीं। इन दक्षिणपंथियों की सहायता से चियांग काई शेक 12 अप्रैल 1927 को शंघाई में कम्युनिस्टों के विरुद्ध हमलावर हो गया। सैकड़ों मजदूरों और कम्युनिस्टों को गोलियों से उड़ा दिया गया। शंघाई आम मजदूर ट्रेड यूनियन पर चियांग काई शेक ने कब्जा कर लिया। जैसे–जैसे चियांग काई शेक उत्तर की ओर बढ़ता गया वह ट्रेड यूनियनों को तबाह करता गया। उसने ऊहान सरकार से अपने को अलग कर लिया। ऊहान में कोमिंतांग का वामपंथी धड़ा शासन कर रहा था जो कम्युनिस्टों के साथ संश्रय का पक्ष लेता था। चियांग काई शेक ने 15 अप्रैल, 1927 को नानकिंग में अपनी सरकार स्थापित की। अब कोमिंतांग की दो सरकारें थी एक ऊहान में तथा दूसरी नानकिंग में। ऊहान अभी भी क्रांतिकारी धारा के साथ जुड़ा हुआ था। इसी ऊहान में हू पे प्रांतीय आम ट्रेड यूनियन परिषद का गठन अक्टूबर, 1926 में हो चुका था।

मई, 1927 में ऊहान में वृहद–प्रशांत ट्रेड यूनियन कांग्रेस का आयोजन किया गया। इसी दौरान ए.सी.एफ.टी.यू का मुख्यालय कैण्टन से ऊहान ले आया गया।

ए.सी.एफ.टी.यू. की चौथी कांग्रेस जून, 1927 में ऊहान में हुई। इस कांग्रेस का आयोजन ऐसे समय में हुआ था जब ट्रेड यूनियन आंदोलन फिर से उतार की तरफ जा रहा था। ऊहान की क्रांतिकारी सरकार भी ज्यादा दिन तक टिकी नहीं रह सकी। उसके कुछ सदस्य चियांग काई शेक से जा मिले और कुछ निर्वासित हो गये। इसी दौरान 1 अगस्त, 1927 को चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने नानचांग विद्रोह को संगठित किया। थोड़े ही समय में कोमिंतांग की सेना को पराजित कर दिया गया। लेकिन 5 अगस्त तक यह विद्रोह कुचल दिया गया। राष्ट्रीय सेना के एक हिस्से को साथ लेकर तथा मजदूरों के साथ ये लोग छापामार आधार इलाके की ओर चले गये। इसी प्रकार कैण्टन में 3 दिनों तक सोवियत सरकार कायम की गयी। यहां भी चियांग काई शेक के सैनिकों द्वारा उसे कुचल दिया गया।

1928 के मध्य से 1930 तक ली–ली–सान ने कई बार मजदूर वर्ग के विद्रोह संगठित किये। इन सभी विद्रोहों का अंत असफलताओं में हुआ और दमन तथा गलत कार्यदिशा के चलते मजदूर आंदोलन और ज्यादा कमजोर हो गया।

इस सभी असफलताओं के कारण कोमिंतांग शासित इलाकों में कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलने वाले मजदूर आंदोलन को गम्भीर धक्का लगा। ऐसी ही भयंकर दमन की परिस्थितियों में ए.सी.एफ.टी.यू. की पांचवीं कांग्रेस गोपनीय हालत में शंघाई में आयोजित की गयी। इस कांग्रेस में मजदूरों का आह्वान किया कि वे छापामार इलाकों में छापामार युद्ध में भाग लेने के लिए किसानों के बीच जायें।

1927 की पराजय के बाद कोमिंतांग शासित इलाकों में कम्युनिस्ट पार्टी गुप्त तरीके से ही काम कर सकती थी। ए.सी.एफ.टी.यू. के कार्यकर्ता गुप्त ट्रेड यूनियनें संगठित करने लगे। वे पीली ट्रेड यूनियनों का पदार्पफाश करने तथा मजदूरों को संगठित करने के कार्य को भारी जोखिम के बीच करते थे। वे राजनीतिक तौर पर तटस्थ ट्रेड यूनियनों के भीतर भी काम करते थे। शंघाई में कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं के बड़े पैमाने पर हुए नरसंहार ने कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलने वाले ट्रेड यूनियन आंदोलन को अत्यंत कमजोर कर दिया था। एक अनुमान के अनुसार, 1927 में 40,000 ट्रेड यूनियन सदस्यों ने अपनी जान गंवाई। इनमें 25,000 लोग लड़ते हुए मारे गये, बाकी 13,000 लोगों को फांसी दी गयी।

ली–ली–सान लाइन की असफलता के बाद चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की दिशा आधार क्षेत्रों में कामों को केन्द्रित होने की ओर गयी। 1931 में चीन में लाल सत्ता का उदय हुआ। यह ''मजदूरों और किसान समुदाय के जनवादी अधिनायकत्व'' की सत्ता थी। इस सरकार में मजदूरों के लिए अलग मंत्रालय बनाया गया। 1931 में यहां ए.सी.एफ.टी.यू. काम कर रही थी। चूंकि इन इलाकों उद्योग धंधे नाम मात्र के थे, इसलिए सभी तरह के मजदूरों को इसकी सदस्यता दी गयी। 1934 में 3 लाख पुरुष और 10 हजार महिलायें विभिन्न यूनियनों की सदस्य थे। अब तक कई आधार क्षेत्र विकसित हो चुके थे। इस दौरान इन इलाकों में मजदूरों की राष्ट्रीय कांग्रेस 1931 में तथा दूसरी राष्ट्रीय कांग्रेस 1934 में बुलाई गयी। इन कांग्रेसों में श्रम सुरक्षा कानून पारित किये गये।

इन सोवियत इलाकों में (आधार क्षेत्रों में) मजदूरों को उत्पादन कार्यों में सक्रियता के साथ लगने के लिए गोलबंद किया जाता था। श्रम सुरक्षा कानून के तहत मजदूरों को हड़ताल करने का अधिकार था। ट्रेड यूनियनों के सदस्य लाल सेना और छापामार दस्तों में भी कार्य करते थे। ट्रेड यूनियन सदस्यों को पृष्ठभाग की रक्षा में भी लगाया जाता था।

लम्बे अभियान के बाद चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का मुख्यालय येनान में स्थित हो गया और सियान की घटना के बाद जापान–विरोधी मोर्चा बन गया। 1935 में ट्रेड यूनियनें गठित करने का काम शुरू हो गया। 1937 में जब हेलेन फोस्टरस्नो येनान गयी थीं तो उन्होंने बताया कि कम्युनिस्ट नियंत्रण के क्षेत्र में 13,000 यूनियन सदस्य थे। अप्रैल, 1938 में शेंशी–कान्सू–निंगश्या सीमान्त क्षेत्र में मजदूरों के प्रतिनिधियों की एक बैठक हुई। इस बैठक में शेंशी–कानसू–निंगश्या सीमान्त क्षेत्र के ट्रेड यूनियन फेडरेशन की स्थापना की गयी। इन इलाकों के ट्रेड यूनियनों का बुनियादी कार्यभार युद्ध के प्रयासों में भागीदारी करना, उत्पादन को बढ़ाना तथा आत्म–निर्भरता हासिल करना था। इसी प्रकार, दूसरे सीमांत क्षेत्रों में भी ऐसे ही मजदूर संगठन खड़े किये गये थे।

द्वितीय विश्व युद्ध का अंत आते–आते चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने शहरी मजदूरों के बीच काम को तेज कर दिया। माओ ने पार्टी की सातवीं कांग्रेस में प्रस्तुत अपने प्रस्ताव ''मिली जुली सरकार के बारे में'' कहाऋ

> ... ... जापानी आक्रामकों की अंतिम पराजय तथा विशेषतः बड़े नगरों और संचार व्यवस्था की महत्वपूर्ण लाइनों को फिर से जीतने में चीन का मजदूर वर्ग बड़ी ही महान भूमिका अदा करेगा। और इस बात की भविष्यवाणी की जा सकती है कि जापान–विरोधी युद्ध के बाद चीनी मजदूर वर्ग के प्रयास और उसका योगदान इससे भी अधिक महान होगा। चीनी मजदूर वर्ग का काम न केवल नई जनवादी राज–व्यवस्था की स्थापना के लिए संघर्ष करना है, बल्कि उसका काम चीन का औद्योगीकरण और उसकी कृषि व्यवस्था का आधुनिकीकरण भी है।'' (माओ त्से तुंग चुनी हुई कृतियां, तीसरा ग्रंथ, पृ -319-320 वितरक–करेण्ट बुक डिपो, कानपुर)

मजदूर वर्ग की इस भूमिका को साकार करने के लिए चीनी मुक्त क्षेत्रों के ट्रेड यूनियनों के फेडरेशन की तैयारी कमेटी की योजना बनी थी और येनान में ट्रेड यूनियनों की कांग्रेस आयोजित करने का निर्णय लिया गया था। लेकिन जापानी साम्राज्यवादियों द्वारा आत्म–समर्पण किये जाने से इसे टाल दिया गया।

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद चीन की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा कोमिंतांग अधिकृत शहरों में ट्रेड यूनियन गतिविधियां बहुत अधिक तेज हो गयीं। वे पहले जो गुप्त तरीके से चलती थीं, अधिकाधिक खुलकर सामने आने लगी। शंघाई में ये सबसे अधिक तेज हुईं। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद कम्युनिस्ट पार्टी और कोमिंतांग के बीच संघर्ष फिर से शुरू होने पर कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता भूमिगत होकर कार्य कर रहे थे। इसी प्रकार अन्य शहरों में भी चीन के उत्तर पूर्व और उत्तरी चीन के शहरों में भूमिगत गतिविधियां वे जारी रखे हुए थे। इस दौरान आर्थिक तंगी, बेरोजगारी और मंहगाई के कारण मजदूरों में असंतोष बढ़ता जा रहा था। कोमिंतांग अधिकाधिक दमन का सहारा लेकर इस असंतोष व गुस्से को दबा रही थी। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी तथा ए.सी.एफ.टी.यू. के कार्यकर्ताओं के संगठित करने के प्रयासों से इन शहरों में मजदूर वर्ग ने संचार के साधनों को काट दिया।

उत्तरी चीन व मंचूरिया पर जन मुक्ति सेना द्वारा कब्जा किये जाने के बाद कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलने वाले मजदूर आंदोलन में तीव्र वृद्धि हुई। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने इन क्षेत्रों में मजदूर आंदोलन को गतिशील बना दिया। जून 1948 तक चीन के चौथाई से अधिक शहर जनमुक्ति सेना द्वारा मुक्त करा लिए गये थे। इसी पृष्ठभूमि में अगस्त, 1948 में ए.सी.एफ.टी.यू. की छठवीं कांग्रेस सम्पन्न हुई।

1948 में अखिल चीन मजदूर फेडरेशन की छठवीं कांग्रेस हुई। इस कांग्रेस में 28 लाख 30 हजार ट्रेड यूनियन सदस्यों के प्रतिनिधि शामिल थे। इस कांग्रेस के बाद जल्द ही जनता के जनवादी अधिनायकत्व के राज्य की स्थापना हो गयी।

इस प्रकार, हम देख सकते हैं कि चीन के मजदूर वर्ग और चीनी जनता ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में 28 वर्षों तक लम्बा संघर्ष चलाया। मजदूर आंदोलन को बहुत पीड़ादायी व कठिन रास्ते से गुजरकर संघर्ष के जटिल तरीके और संगठन के विभिन्न रूप अख्तियार करने पड़े। इन रूपों में कानूनी और गैर–कानूनी, गुप्त और खुले, रक्तपातपूर्ण व रक्तपातहीन, शांतिपूर्ण व सशस्त्र संघर्ष, छापामार और नियमित युद्ध शामिल थे।

चीनी क्रांति की यह विशेषता थी कि यह शुरू से ही यानी 1925–1927 के दौर से ही सशस्त्र क्रांति के बतौर विकसित हुई थी। चीनी क्रांति के चारों काल खण्डों में 1925–27 उत्तरी अभियान के दौर में, 1927–1937 भूमि क्रांति के दौर में, 1937–45 जापान विरोधी युद्ध के दौर में और 1946.49 जनमुक्ति युद्ध के दौर में सशस्त्र संघर्ष संघर्ष का मुख्य रूप रहा था और सेना संगठन का मुख्य रूप रही थी। संगठन के अन्य रूप एवं संघर्ष के अन्य सभी रूप इसकी मदद करने के लिए थे। इसीलिए स्टालिन ने बहुत पहले 1926 में ही यह कह दिया था कि चीनी सशस्त्र क्रांति चीनी सशस्त्र प्रतिक्रांति का मुकाबला कर रही है। यह चीनी क्रांति की विशिष्टता थी।

लेकिन, हमारे देश के कतिपय कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठनों में यह धारणा व्याप्त है कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी शुरू से ही किसानों के बीच ही काम करती थी, कि उसका मजदूरों के बीच कोई आधार नहीं था। जबकि तथ्य इसके विपरीत बयान करते हैं। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी शुरुआत ही मजदूर वर्ग के बीच काम से की थी। विशाल किसान आबादी वाले देश में जहां मजदूर वर्ग की संख्या अत्यल्प हो, वहां क्रांति की मुख्य लड़ाकू शक्ति किसान समुदाय हो जाता है। इसके अलावा, एक अर्द्ध–औपनिवेशिक व अर्द्ध–सामंती देश में जहां विभिन्न साम्राज्यवादी शक्तियों का हस्तक्षेप हो और देश युद्ध सरदारों में बंटा हो, कोई केन्द्रीकृत राज्यसत्ता न हो तो वहां संघर्ष के रूप में शुरू से ही सशस्त्र संघर्ष की ओर जाना पड़ा था। चीन का राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग डा. सुन यात सेन के नेतृत्व में पहले से ही सशस्त्र संघर्ष में लगा हुआ था। प्रथम उत्तरी अभियान के दौर में ही चीन की कम्युनिस्ट पार्टी सशस्त्र संघर्ष में उतर चुकी थी। लेकिन चीन की कम्युनिस्ट पार्टी संघर्ष के किसी भी दौर में मजदूर वर्ग के बीच काम से अलग नहीं हुई थी। माओ त्से तुंग ने मजदूर वर्ग की चीनी क्रांति में भूमिका के बारे में कहा था :

''सर्वहारा वर्ग

''चीनी सर्वहारा वर्ग में आधुनिक औद्योगिक मजदूरों की संख्या 25 लाख से लेकर 30 लाख तक है, छोटे उद्योगों के मजदूरों, दस्तकारों और शहरों के दुकानदार कर्मचारियों की संख्या लगभग एक करोड़ बीस लाख है और इनके अलावा देहाती सर्वहारा (खेत मजदूर), शहरों के और देहातों के अन्य सम्पत्तिहीन लोगों की विशाल संख्या है। सभी जगहों के सर्वहारा वर्ग के बुनियादी गुणों–अर्थव्यवस्था के सबसे बढ़े हुए स्वरूप से उसका सम्बंध, संगठन के प्रति उसके मजबूत भाव और अनुशासन और उत्पादन के निजी साधनों के अभाव के अलावा चीनी सर्वहारा के अन्य अनेक विशिष्ट गुण हैं।

''वे गुण क्या हैं?

''प्रथम, क्रांतिकारी संघर्ष में किसी दूसरे वर्ग से चीनी सर्वहारा अधिक दृढ़प्रतिज्ञ और पक्का है, क्योंकि वह ऐसे तिहरे ;साम्राज्यवादी, पूंजीवादी और सांमती) उत्पीड़न का शिकार है, जिसकी निर्ममता तथा तीव्रता किसी अन्य देश में नहीं पायी जाती। चूंकि औपनिवेशिक और अर्द्ध–औपनिवेशिक चीन में यूरोप की तरह सामाजिक सुधारवाद का कोई आर्थिक आधार नहीं है, इसलिए कुछ गद्दारों को छोड़कर समूचा सर्वहारा वर्ग ही सबसे ज्यादा क्रांतिकारी है।

''द्वितीय, क्रांतिकारी मंच पर प्रकट होने के समय से ही चीनी सर्वहारा वर्ग को उसकी अपनी क्रांतिकारी पार्टी–चीन की कम्युनिस्ट पार्टी–का नेतृत्व मिल गया और चीनी समाज में वह राजनीतिक तौर पर सबसे अधिक जागृत वर्ग बन गया।

''तृतीय, चूंकि चीनी सर्वहारा वर्ग का अधिकांश भाग मूलतः उखड़े हुए किसानों से आया है, इसलिए किसान जनता से उसका स्वाभाविक सम्बंध है। इससे सर्वहारा और किसान का निकट संश्रय स्थापित करने में सहायता मिलती है।

''इसलिए, कुछ अपरिहार्य कमजोरियों के बावजूद, मिसाल के लिए (किसान जनता की तुलना में) संख्या में उसका कम होना, उसकी अल्पवयस्कता (पूंजीवादी देशों के सर्वहारा की तुलना में), और (पूंजीपति वर्ग की तुलना में) उसका निम्न शैक्षिक स्तर, चीनी सर्वहारा फिर भी चीनी क्रांति की बुनियादी प्रेरक शक्ति है। सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व के बिना सम्भवतः चीनी क्रांति सफल नहीं हो सकती।

... ...

''चीन के सर्वहारा वर्ग को यह समझ लेना चाहिए कि यद्यपि उसमें सर्वोच्च राजनीतिक चेतना और संगठन का भाव है फिर भी वह केवल अपनी शक्ति के भरोसे विजय प्राप्त नहीं कर सकता। विजय के लिए उसे विभिन्न परिस्थितियों में उन तमाम वर्गों और तबकों के साथ एकता स्थापित करनी चाहिए जो क्रांति में भागीदार बन सकते हैं, और उसे क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चा जरूर संगठित करना चाहिए। चीनी समाज के तमाम वर्गों में किसान जनता मजदूर वर्ग की दृढ़ सहयोगी है, शहरी निम्न पूंजीपति वर्ग विश्वसनीय सहयोगी और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग किसी–किसी समय एक सीमा तक सहयोगी है। चीन के आधुनिक क्रांतिकारी इतिहास द्वारा स्थापित यह एक बुनियादी नियम है।'' (माओ त्से तुंग, चुनी हुई कृतियां, दूसरा ग्रंथ ''चीनी क्रांति और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी'', पृ. 395-97 विचार प्रकाशन, कानपुर, 1969)

माओ नव–जनवादी क्रांति और समाजवादी क्रांति के अंतर्सम्बंधों की चर्चा करते हुए कहते हैं:

''चीन की पूंजीवादी जनवादी क्रांति (नयी जनवादी क्रांति) को पूरा करना और जब तमाम आवश्यक परिस्थितियां परिपक्व हो जायं, तब उसे समाजवादी क्रांति में रूपान्तरित करना–चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का कुछ ऐसा महान और शानदार क्रांतिकारी काम है। प्रत्येक पार्टी सदस्य को इसकी पूर्ति के लिए प्रयास करना चाहिए और किसी भी परिस्थिति में इसे अधूरा न छोड़ना चाहिए। *कुछ अपरिपक्व कम्युनिस्टों का विचार है कि हमारा तो काम मौजूदा जनवादी क्रांति तक सीमित है और भावी समाजवादी क्रांति उसमें शामिल नहीं है, यह मौजूदा क्रांति या खेतिहर क्रांति ही समाजवादी क्रांति है।* इस बात को दृढ़तापूर्वक बता देना चाहिए कि ये विचार गलत हैं। प्रत्येक कम्युनिस्ट को जानना चाहिए कि कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चीनी क्रांतिकारी आंदोलन में समूचे तौर पर दो मंजिलें यानी जनवादी और समाजवादी क्रांतियां मिली–जुली हैं और अनिवार्य रूप से दोनों ही भिन्न प्रक्रियायें हैं। जनवादी क्रांति समाजवादी क्रांति की आवश्यक तैयारी है और समाजवादी क्रांति जनवादी क्रांति का अनिवार्य प्रतिफलन। तमाम कम्युनिस्ट जिस अंतिम लक्ष्य के लिए प्रयत्नशील हैं, वह समाजवादी और साम्यवादी समाज है। नेतृत्व के लिए चीनी क्रांति के सही जनवादी और समाजवादीः क्रांतियों के बीच के भेदों और अंतर्सम्बंधों की समझ अपरिहार्य है।'' (वही, पृ.402-403, शब्दों पर जोर हमारा)

1949 में चीन में साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद और सामंतवाद का प्रतिनिधित्व करने वाली सत्ता को उखाड़ फेंका गया। इस सत्ता को कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में (मजदूर वर्ग के नेतृत्व में) व्यापक किसान समुदाय, शहरी निम्न पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के संयुक्त मोर्चे ने उखाड़ फेंका। चीन की जनमुक्ति सेना ने कोमिंतांग सेना को पराजित कर जनता के जनवादी अधिनायकत्व के राज्य की स्थापना की।

II
नव–जनवादी क्रांति के बाद चीन का ट्रेड यूनियन आंदोलन

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी अपने समूचे इतिहास के दौरान ट्रेड यूनियनों में सक्रिय थी और उसके पास ट्रेड यूनियन संगठन था। जैसा कि पहले भाग में बताया जा चुका है कि मुक्ति के एक वर्ष पहले 1948 में ए.सी.एफ.टी.यू. को समूचे चीन के पैमाने पर पुनर्जीवित किया जा चुका था। 1949 के पहले और उसके बाद में ट्रेड यूनियनों की भूमिका बदल चुकी थी। 1949 के पहले जहां ट्रेड यूनियनों को अपने दुश्मन पूंजीपति वर्ग व उसकी सत्ता से निपटना पड़ता था, वहीं 1949 के बाद वह सत्ता में प्रमुख भागीदार था तथा उसे कभी–कभी पूंजीपति वर्ग से निपटना पड़ता था।

1949 में सत्ता में आने के बाद चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के समक्ष ट्रेड यूनियनों के क्षेत्र में फौरी कार्य कोमिंतांग द्वारा छोड़े गये ट्रेड यूनियन संगठनों को अपने में शामिल करना था। 5 नवम्बर, 1949 को कोमिंतांग द्वारा खड़े किये गये चीनी मजदूरों के एसोसिएशन ने एक सम्मेलन बुलाया और उसने अपने को भंग कर दिया। इसका शीर्ष नेता पहले ही (1948) में एसोसिएशन छोड़ चुका था। जू–जेफान नामक इस नेता ने ए.सी.एफ.टी.यू. की सदस्यता पहले ही ले ली थी। अब समूचा एसोसिएशन इसमें शामिल हो गया था। ए.सी.एफ.टी.यू. ने औद्योगिक आधार पर यूनियनों को गठित करने की योजना बनायी। 1950 में ट्रेड यूनियन कानून पारित किया गया। इस कानून के तहत ए.सी.एफ.टी.यू. सभी नयी ट्रेड यूनियनों की सर्वोच्च निकाय घोषित की गयी। सभी नई ट्रेड यूनियनों को स्वीकृति के लिए अपनी रिपोर्ट ए.सी.एफ.टी.यू. को या इससे सम्बद्ध संगठन को देनी होती थी।

ट्रेड यूनियनों को तीन आधारों पर संगठित किया गया था। पहला, राष्ट्रीय आधार पर, दूसरे स्थानीय आधार पर और तीसरे, बुनियादी यूनियन के आधार पर।

राष्ट्रीय आधार पर ए.सी.एफ.टी.यू. अपने विभिन्न विभागों के माध्यम से काम करती थी और वह अपने क्षेत्रीय कार्यालय भी स्थापित करती थी। वह औद्योगिक आधार पर बनी यूनियनों के जरिये कार्य करती थी।

स्थानीय आधार पर भौगोलिक इलाकों के अनुसार प्रांतों में स्वायत्त क्षेत्रों, केन्द्रीय सत्ता के प्रत्यक्ष अंतर्गत नगरपालिकाओं, स्वायत्त जिलों, प्रांतीय सत्ताओं के शहरों और काउन्टियों व कस्बों में काम करने वाली ट्रेड यूनियन परिषदें थीं। बुनियादी स्तर पर उद्यमों, संस्थाओं और स्कूलों की ट्रेड यूनियनें थीं।

इस दौरान ट्रेड यूनियनों का विस्तार बड़े पैमाने पर हुआ था। चूंकि ट्रेड यूनियनों की भूमिका में उत्पादन में बढ़ोत्तरी करना भी था, इसलिए राष्ट्रीय पूंजीपतियों के निजी उद्यमों में पूंजी और श्रम के बीच टकराव की स्थितियां बनी रहती थीं। इससे निपटने के लिए एकतरफ तो चीन की सरकार ने 'श्रम पूंजी सलाहकार सम्मेलनों' की स्थापना 1950 में निजी उद्यमों में की। इसके अलावा चीन की सरकार ने 1949 में तीन दस्तावेज जारी किये। इनमें पहला, निजी औद्योगिक व वाणिज्यिक उद्यमों में श्रम और पूंजी के बीच सामूहिक संविदा पर अस्थायी उपाय, दूसरा, श्रम और पूंजी के बीच सम्बंधों के तय करने के अस्थायी उपाय और तीसरा था श्रम विवादों को हल करने के तौर–तरीकों के बारे में अस्थायी नियम। इनसे श्रम और पूंजी के बीच टकराव से निपटने के तौर–तरीके निकाले गये।

इसके पहले ही माओ ने घोषित कर दिया था कि नव जनवादी क्रांति के बाद चीन में श्रम और पूंजी के बीच अंतर्विरोध प्रधान हो गये हैं।

ट्रेड यूनियनों के फेडरेशन (ए.सी.एफ.टी.यू.) की सातवीं कांग्रेस 1953 में बीजिंग में हुई। इस दौरान यानी 1948 से 1953 के बीच ट्रेड यूनियन सदस्यों की संख्या 23 लाख 73 हजार से बढ़कर 1 करोड़ 2 लाख हो गयी। यह वही समय था जब पहली पंच वर्षीय योजना लागू की गयी। 1949.52 के काल में चीन की अर्थव्यवस्था को पुनः पटरी पर लाया गया था। अब उद्योगों के विस्तार पर जोर दिया गया। लेकिन इसी समय ए.सी.एफ.टी.यू. के भीतर दो कार्य दिशाओं के बीच संघर्ष तेज हो गया। यह संघर्ष महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति शुरू होने तक तेज से तेजतर होता चला गया। 1948 में ली ली सान को ए.सी.एफ.टी.यू. का प्रथम उपाध्यक्ष चुना गया था। लेकिन 1953 की कांग्रेस में उसे नहीं चुना गया। ली ली सान ने आठवीं कांग्रेस में अपनी गलतियों को स्वीकार किया। उनमें ये थीं :

1.'अर्थवाद' के रास्ते का अनुसरण करने तथा सार्वजनिक हितों के ऊपर व्यक्तिगत और फौरी हित पर जोर देना।

2. निजी उद्यमों में ट्रेड यूनियनों को मजबूत करने पर कोई गम्भीर प्रयास न करना।

3. कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व से भटकना। ट्रेड यूनियन कानून में इस बात का कोई जिक्र नहीं था कि ट्रेड यूनियन को मजदूर वर्ग की पार्टी के ईर्द–गिर्द गोलबंद करना चाहिए।

4. मजदूरों को कम्युनिज्म के बारे में शिक्षित करने के महत्व को कम करना।

चीन की मुक्ति की पूर्ववेला में माओ ने सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में पेश रिपोर्ट में कहा था :

''... ... चीनी क्रांति की देशव्यापी विजय होने तथा भूमि समस्या हल हो जाने के बाद भी चीन में दो बुनियादी अंतरविरोध बने रहेंगे। पहला अंतरविरोध अंदरूनी है, अर्थात मजदूर वर्ग तथा पूंजीपति वर्ग के बीच का अंतरविरोध। दूसरा अंतरविरोध बाहरी है, चीन तथा साम्राज्यवादी देशों के बीच अंतरविरोध। इसलिए जनता की जनवादी क्रांति की विजय के बाद, मजदूर वर्ग के नेतृत्व में चलने वाले लोक गणराज्य की राज्यसत्ता को कमजोर नहीं होने देना चाहिए, बल्कि उसे मजबूत बनाया जाना चाहिए। आर्थिक संघर्ष में राज्य की दो बुनियादी नीतियां होंगी–देश के अंदर पूंजी का नियमन करना तथा वैदेशिक व्यापार पर नियंत्रण करना। जो कोई

भी इस बात को नजरअंदाज करेगा या इसे कम महत्वपूर्ण समझेगा, वह बेहद गम्भीर गलतियां करेगा।'' (माओ त्से तुंग की संकलित रचनायें, ग्रंथ 4, पृ - 625, विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, पेकिंग, 1976)

माओ द्वारा प्रस्तुत इस रिपोर्ट की अंतर्वस्तु के विरुद्ध चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के शीर्ष नेतृत्व का एक हिस्सा यह मानने को तैयार नहीं था कि मुक्ति के बाद प्रधान अंतरविरोध मजदूर वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच है। यही कारण है कि ली ली सान के नेतृत्व में जब ट्रेड यूनियन कानून पारित किया गया उसमें ट्रेड यूनियनों को कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलने की बात को छोड़ दिया गया था। उसी समय श्रम–पूंजी सलाहकार सम्मेलन (1950) का गठन किया गया था जिसमें पूंजीपति शामिल होने में आनाकानी करते थे। एक तरफ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी गृहयुद्ध के दौरान जर्जर अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए मजदूर वर्ग को उत्पादन के लिए लामबंद कर रही थी तो दूसरी तरफ पूंजीपति वर्ग तरह–तरह से चोरी और हेराफेरी कर रहा था तथा ट्रेड यूनियन नेताओं को घूसखोरी व प्रलोभनों के जरिये अपने पक्ष में करने की कोशिश कर रहा था।

1949 में मुक्ति के बाद प्रतिक्रियावादी तत्व जगह–जगह गड़बड़ी फैला रहे थे। उनके विरुद्ध अभियान 1950 में तेज हो गया था। 1951 में एक सरकुलर के जरिये चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने मजदूर वर्ग के भीतर इन प्रतिक्रियावादियों को अलग–थलग करने के अभियान को आगे बढ़ाया। ये प्रतिक्रियावादी तत्व मजदूरों के बीच गुण्डे, और स्थानीय दबंग लोग थे जो मजदूरों से उगाही करते थे। मुक्ति के शुरुआती काल में शहरों में तोड़–फोड़ काफी हो रही थी। मजदूरों के बीच प्रतिक्रियावादी पार्टियों के गुप्त एजेण्ट काम कर रहे थे। कोमिंतांग के जमाने में मजदूरों को नियंत्रण में रखने के लिए उसके ट्रेड यूनियन नेता गुण्डों एवं खुफिया पुलिस से सांठगांठ किये रहते थे। वे सब मजदूरों को डराने–धमकाने का काम कर रहे थे। इसी रोशनी में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने इनसे निपटने के लिए सरकुलर जारी किया था।

ए.सी.एफ.टी.यू. ने प्रतिक्रांतिकारियों से निपटने के बाद खुद ट्रेड यूनियनों के भीतर आलोचना और आत्म आलोचना का दौर शुरू किया। इस आलोचना और आत्म आलोचना के दायरे में फैक्टरी प्रबंधन के अधिकारी, ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता और खुद मजदूर आते थे। उत्पादन को बेहतर करने के लिए राजकीय क्षेत्र के उद्यमों में फैक्टरी प्रबंधक कमेटी और मजदूरों व कर्मचारियों के प्रतिनिधि सम्मेलन की व्यवस्था लागू की गयी। फैक्टरी प्रबंधक कमेटी में प्रबंधक, उप प्रबंधक, मुख्य इंजीनियर और अन्य महत्वपूर्ण उत्पादन अधिकारी के साथ–साथ समान संख्या में मजदूर और कर्मचारी रहते थे। फैक्टरी प्रबंधन कमेटी सब तय करती थी और वह सम्मेलन का इस्तेमाल मजदूरों को निदेशित करने में करती थीं। एक व्यक्ति प्रबंधन की प्रणाली के तहत प्रबंधक सर्वशक्तिमान हो गया था।

27 मई, 1957 के जन दैनिक (रेनमिन रिबाओ) ने अपने सम्पादकीय में लिखाः

> ''1953 के दौरान उद्योगों और संचार के कई राज्य उद्यमों में एक व्यक्ति की जिम्मेदारी प्रणाली लागू होने के बाद मजदूरों का प्रतिनिधि सम्मेलन एक ऐसी चीज में बदल गया है जिसमें उद्यम के नेतागण कार्यभार निर्धारित करते हैं और मजदूर जन समुदाय उसको पूरा करने की गारण्टी करते हैं। उद्यम के नेतागण ऐसे सम्मेलनों में कभी आत्म आलोचना नहीं करते यह तो और भी कम होता है कि वे आम मजदूरों को नीचे से आलोचना करने के लिए प्रोत्साहित करें।'' (South China Morning Post, No. 1547 P.10 quoted in Lee Lai To's book Trade Unions in China अनुवाद हमारा)

इसके ठीक पहले निजी फैक्टरियों में श्रम–पूंजी सम्मेलनों का गठन किया गया था। 1951 में सरकारी कर्मचारियों, पार्टी कार्यकर्ताओं के भीतर भ्रष्टाचार, फिजूलखर्ची और नौकरशाही के विरुद्ध ''तीन–बुराई विरोधी आंदोलन'' तथा 1952 में निजी–औद्योगिक–वाणिज्यिक कारोबार के मालिकों के विरुद्ध ''पांच–बुराई विरोधी आंदोलन'' चलाया गया। पूंजीपतियों के विरुद्ध चलने वाले इस ''पांच–बुराई विरोधी आंदोलन'' के मुद्दे थे– रिश्वत देने, टैक्स चोरी करने, सरकारी अनुबंधों में धोखाधड़ी करने, राजकीय सम्पत्ति की चोरी करने और राज्य की आर्थिक सूचनाओं की चोरी करने।

इन आंदोलनों के जरिये पार्टी, सरकार, ट्रेड यूनियनों सहित विभिन्न जन संगठनों के पदाधिकारियों तथा पूंजीपतियों के भ्रष्ट कारनामों के विरुद्ध संघर्ष चलाया गया था।

माओ ने केन्द्रीय कमेटी के लिए इन संघर्षों को संचालित करने के बारे में निर्देश जारी किये थे–

(1)

> ''भ्रष्टाचार व फिजूलखर्ची के खिलाफ संघर्ष चलाना समूची पार्टी का एक मुख्य कार्य है, और हम आप लोगों से कह चुके हैं कि इस पर गम्भीरता से ध्यान दें। यह जरूरी है कि हम समूची पार्टी का व्यापक रूप से शुद्धीकरण करें, जिससे भ्रष्टाचार के सभी मामलों का, चाहे वे बड़े हों, मध्यम दर्जे के हों या छोटे, मुकम्मिल तौर पर पर्दाफाश किया जा सके, और अपने प्रहार का मुख्य निशाना बड़े–बड़े भ्रष्ट लोगों को बनायें, जब कि मध्यम दर्जे के और छोटे–भ्रष्ट लोगों के प्रति उन्हें शिक्षित करने और उनका नवरूपान्तर करने की नीति अपनायें, ताकि वे फिर से वैसा आचरण न करें। सिर्फ ऐसा करके ही पूंजीपति वर्ग द्वारा बहुत से पार्टी सदस्यों को आचरण–भ्रष्ट किये जाने के गम्भीर खतरे को रोका जा सकता है... ...
>
> ''(2)
>
> ''इस तथ्य पर खास ध्यान देना जरूरी है कि पूंजीपति वर्ग द्वारा आचरण भ्रष्ट किये जाने के फलस्वरूप कुछ कार्यकर्ता बुरी तरह भ्रष्टाचार में लगे हुए हैं। ऐसे लोगों को निश्चित रूप से खोज निकालना चाहिए, बेनकाब कर देना चाहिए और सजा देनी चाहिए तथा इसे एक मुख्य संघर्ष समझना चाहिए।'' (30 नवम्बर, 1951)

इसी प्रकार ''पांच बुराई'' विरोधी आंदोलन के बारे में उन्होंने कहाः

"(6)

> ''पांच बुराई–विरोधी संघर्ष के दौरान और उसके बाद हमें नीचे लिखे मकसद हासिल कर लेने चाहिए :
>
> (1) निजी उद्योग व वाणिज्य की स्थिति की बिल्कुल स्पष्ट जानकारी प्राप्त कर लेना, जिसमें पूंजीपति वर्ग के साथ एकता कायम करने और उसे नियंत्रित करने तथा देश में योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था का विकास करने का काम ज्यादा अच्छी तरह किया जा सके। परिस्थिति की स्पष्ट जानकारी प्राप्त किये बिना योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था असम्भव है।
>
> (2) मजदूर वर्ग व पूंजीपति वर्ग के बीच स्पष्ट विभाजन–रेखा खींचना, तथा ट्रेड यूनियनों में भ्रष्टाचार को और जन–समुदाय से अलग–थलग रहने वाली नौकरशाही को खत्म कर देना और पूंजीपतियों के गुर्गों का सफाया कर देना। ऐसे गुर्गे तथा श्रम और पूंजी के बीच दोलायमान रहने वाले मध्यपंथी तत्व हर जगह की ट्रेड यूनियनों में मौजूद हैं। यह जरूरी है कि हम संघर्ष के दौरान मध्यपंथी तत्वों को शिक्षित करें और अपने पक्ष में कर लें, तथा पूंजीपतियों के उन गुर्गों को जिन्होंने गम्भीर अपराध किये हों बाहर निकाल दें।'' (23 मार्च, 1952) (''तीन–बुराई'' विरोधी और ''पांच बुराई'' विरोधी संघर्ष के बारे में माओ त्से तुंग की संकलित रचनायें, ग्रंथ .5, पृ.47 एवं 51) प्रोग्रेसिव पब्लिकेशन्स, दिल्ली)

''पांच–बुराई'' विरोधी आंदोलन का मुख्य लक्ष्य मजदूर वर्ग को पूंजीपतियों के विरुद्ध वर्ग–संघर्ष के महत्व के प्रति शिक्षित करना था। इसमें बड़े पैमाने पर मीटिंगें बुलाकर पूंजीपतियों द्वारा किये गये अपराधों को बेनकाब किया जाता था और उसकी निंदा की जाती थी। ट्रेड यूनियनों और अन्य संगठनों द्वारा ''पांच–बुराई'' विरोधी कमेटी बनायी जाती थी तथा मजदूरों को जांच–पड़ताल टीम में शामिल किया

जाता था। इसके लिए ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं और मजदूरों को प्रशिक्षित किया जाता था। एक अनुमान के अनुसार, 1952 में राष्ट्रीय बजट का लगभग दसवां हिस्सा जुर्मानों और करों की अदायगी से आया था। यह वस्तुतः वर्ग–संघर्ष था। मजदूर वर्ग द्वारा पूंजीपति वर्ग के विरुद्ध संघर्ष था। अभी तक लागू प्रबंधन के वर्चस्व के खिलाफ ट्रेड यूनियनों के नेतृत्व में मजदूरों के प्रभुत्व स्थापित करने की कोशिश थी।

इसी दौरान पार्टी के भीतर काओ कांग और राओ शू श गुट की षड्यंत्रकारी पार्टी विरोधी गतिविधियों के विरुद्ध संघर्ष किया गया और उन्हें पार्टी से बाहर किया गया। यह ध्यान देने योग्य बात है कि काओ कांग एक व्यक्ति के प्रबंधन का हिमायती था। वह पार्टी और ट्रेड यूनियनों के भीतर पहले इलाकाई क्षत्रप के तौर अपने को स्थापित किये हुए था षड्यंत्रकारी तरीकों से पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व पर कब्जा करना चाहता था।

1955 में व्यापक राष्ट्रीयकरण की योजना के साथ चीन में वर्ग–संघर्ष एक नई ऊंचाई तक पहुंच गया। ट्रेड यूनियनों और मजदूरों ने इस संघर्ष में व्यापक हिस्सेदारी की। वे पूंजीपतियों की चालाकियों पर निगाह रखते थे। पूंजीपति अपने कारोबारों से भारी मात्रा में पैसा निकालने की कोशिश करते थे। वे फैक्टरी में अपने वफादार गुर्गों को नियुक्त कर रहे थे। इसके साथ ही इस रूपांतरण को तहस–नहस करने के लिए कुछ मजदूरों की मजदूरी बढ़ा रहे थे। वे अपनी परिसम्पत्ति को बढ़ा–चढ़ा कर बता रहे थे। इन सबका मूल्यांकन करने के लिए ट्रेड यूनियनें मजदूर वर्ग को गोलबंद करती थीं। 1956 के अंत तक आते–आते लगभग सभी पूंजीपतियों के निजी उद्यमों को सार्वजनिक–निजी उद्यमों में तब्दील कर दिया गया।

चीनी समाज में समाजवादी रूपांतरण के दौरान वर्ग–संघर्ष एक नयी मंजिल में पहुंच गया था। ''तीन बुराई'' विरोधी आंदोलन के बाद पार्टी, सरकार और जनसंगठनों के भीतर व्याप्त नौकरशाही, फरमानशाही और कानूनों के उल्लंघन के विरुद्ध व्यापक अभियान चलाया गया। यह कम्युनिस्ट पार्टी, सरकार और जनसंगठनों में व्याप्त पूंजीवादी कार्यशैली के विरुद्ध संघर्ष था। अब समाजवादी रूपांतरण के समय पूंजीवादी तत्व बौखला गये थे। उन्होंने अखबारों और अन्य साधनों के जरिये कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार के विरुद्ध जहर उगलना शुरू कर दिया था। इसी विचारधारात्मक संघर्ष को सुसंगत रूप से चलाने के लिए माओ ने ''सौ फूल खिलने दो, सौ विचारों में होड़ होने दो'' अभियान का सूत्रपात किया।

माओ ने ''सौ फूल खिलने दो और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो'' तथा ''दीर्घकालीन सह अस्तित्व का पारस्परिक निरीक्षण'' के नारे के बारे में कहाः

> ''... ... ये नारे चीन में मौजूद विशिष्ट स्थितियों को ध्यान में रखते हुए, इस तथ्य को स्वीकार करने के आधार पर कि समाजवादी समाज में अब भी विभिन्न प्रकार के अंतरविरोध मौजूद हैं, और देश के आर्थिक व सांस्कृतिक विकास की रफ्तार तेज करने की फौरी आवश्यकता के अनुरूप पेश किये गये हैं। ''सौ फूल खिलने दो और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो'' की नीति कला व विज्ञान को प्रोत्साहन देने तथा हमारे देश में एक समृद्ध समाजवादी संस्कृति का विकास करने की नीति है। ... ...
>
> ''... ... चीन में हालांकि मिलकियत की व्यवस्था का समाजवादी रूपांतर मुख्य रूप से पूरा हो चुका है, और हालांकि जन–समुदाय के बड़े पैमाने के तूफानी वर्ग–संघर्ष, जो पहले के क्रांतिकारी कालों की विशेषता रहे हैं, मुख्य रूप से समाप्त हो चुके हैं, फिर भी सत्ताच्युत जमींदार वर्ग और दलाल–पूंजीपति वर्ग के अवशेष अब भी मौजूद हैं, पूंजीपति वर्ग अब भी मौजूद है और निम्न पूंजीपति वर्ग का नव रूपांतर करना अभी सिर्फ शुरू ही हुआ है। वर्ग संघर्ष अभी हरगिज समाप्त नहीं हुआ है। सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का वर्ग संघर्ष, विभिन्न राजनीतिक शक्तियों के बीच का वर्ग संघर्ष, तथा विचारधारा के क्षेत्र में सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का वर्ग–संघर्ष अब भी एक दीर्घकालीन और टेढ़ा–मेढ़ा संघर्ष बना रहेगा, यहां तक कि कभी–कभी वह बहुत तीक्ष्ण भी हो जायेगा। सर्वहारा वर्ग अपने विश्व–दृष्टिकोण के अनुसार दुनिया को बदलना चाहता है और पूंजीपति वर्ग अपने विश्व–दृष्टिकोण के अनुसार, इस बारे में यह सवाल कि अंत में समाजवाद विजयी होगा या पूंजीवाद, वास्तव में अभी तय नहीं हुआ ... ...
>
> ''हमारे देश में समाजवाद और पूंजीवाद के बीच के विचारधारात्मक संघर्ष में कौन जीतेगा, इस मसले को तय करने में काफी लम्बा अरसा लगेगा। कारण यह है कि पूंजीपति वर्ग तथा पुराने समाज से आये हुए बुद्धिजीवियों के प्रभाव का अस्तित्व, उनकी वर्ग–विचारधारा का अस्तित्व, हमारे देश में आगे भी बहुत दिनों तक बना रहेगा।'' ... ... (माओ त्से तुंग, संकलित रचनायें, ग्रंथ 5, पृ.383–85) प्रोगेसिव पब्लिकेशन्स, दिल्ली)

''सौ फूल खिलने दो और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो'' आंदोलन के दौरान ए.सी.एफ.टी.यू. और अन्य ट्रेड यूनियनों के सभी दैत्य और दानव तथा जहरीली खरपतवार खुल कर समाजवाद के विरोध में, कम्युनिस्ट पार्टी के विरोध में आ गये। अन्य संगठनों की तरह ए.सी.एफ.टी.यू. में यह खुली जहरीली बयार प्रकट हो गयी। कम्युनिस्ट पार्टी और विभिन्न जन संगठनों ने अपने समाचार पत्रों में इन समाजवाद–विरोधी प्रहारों को प्रकाशित किया। इसके बाद पूंजीवादी दक्षिणपंथी तत्वों के विरुद्ध संघर्ष तेज हो गया। ए.सी.एफ.टी.यू. के अंदर से पूंजीवादी दक्षिणपंथी तत्वों के विरुद्ध कार्यवाईयां की गयीं। उनमें से अधिकांश को सुधरने का मौका दिया गया।

इसी दौरान दिसम्बर, 1957 में ए.सी.एफ.टी.यू. की आठवीं कांग्रेस हुई। इस आठवीं कांग्रेस में संविधान में यह संशोधन किया गया। मजदूरों को चाहिए कि :

> ''(वे) समाजवादी व्यवस्था की हिफाजत व सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करेंऋ तमाम समाजवाद विरोधी दृष्टिकोणों व कार्यवाइयों, सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान, कानून का तथा सामाजिक व कार्य अनुशासन का उल्लंघन और भ्रष्टाचार व फिजूलखर्ची की सभी कार्यवाइयों के विरुद्ध लड़ें।'' (8 th congress of ACFTU, Foreign Languages Press, Peking, 1958, P-112,Quoted in Trade Unions in China, By Lee Lai To, P-55 अनुवाद हमारा)

आठवीं कांग्रेस के बाद ए.सी.एफ.टी.यू. के नेतृत्व में एक हद तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी से स्वतंत्र होने की मांग उठने लगी। ए.सी.एफ.टी.यू. के कुछ शीर्ष नेता यह शिकायत करने लगे कि ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं को चौथी श्रेणी का कर्मचारी समझा जाता है। सितम्बर, 1957 की ए.सी.एफ.टी.यू. के पार्टी सदस्यों की बैठक में 'पार्टी से स्वायत्तता, के सवाल पर बहस हुई। यह वस्तुतः दो कार्य दिशाओं के बीच संघर्ष था। 'पार्टी से स्वायत्तता, और ट्रेड यूनियनों में पार्टी नेतृत्व रखने के बीच संघर्ष था। इस संघर्ष में पार्टी से स्वायत्तता रखने की मांग करने वालों की पराजय हुई। ए.सी.एफ.टी.यू. के मुखपत्र के 'दैनिक मजदूर' (गोंग्रेन रिबाओ) के निदेशक सहित कई शीर्ष पदाधिकारी पूंजीवादी दक्षिणपंथी थे जिनके विरुद्ध संघर्ष चलाया गया। गोंग्रेन रिबाओ के निदेशक येंग योंग वेन ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रचार विभाग द्वारा गोंग्रेन रिबाओ की जांच–पड़ताल करने से मना कर दिया था। 'सौ फूल खिलने दो और सौ विचारशाखाओं में होड़ होने दो' अभियान के दौरान जब दक्षिणपंथी पार्टी पर हमला कर रहे थे तो उसने इस अखबार के जरिए किसी न किसी रूप में उनका समर्थन किया था। लेकिन जब दक्षिणपंथी विरोधी अभियान पार्टी द्वारा चलाया गया तो उसने उक्त अखबार में उत्पादन बढ़ाने सम्बंधी लेख छापकर इस अभियान से ध्यान हटाने की कोशिश की थी। इसके अलावा उसने ''पश्चिम की यात्रा पर नोट'' नाम से ग्रोंगिन रिबाओ में एक लेख लिखा था जिसमें कहा गया था कि जहां किसी फैक्टरी में इतने अधिक पार्टी व लीग (नौजवान) सदस्य हों, वहां ट्रेड यूनियनों के उपयोग करने पर कोई ध्यान नहीं दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त उसने गोंग्रेन रिबाओ को अपने 'स्वतंत्र राज्य' की तरह बना लिया था। येंग योंग वेन के विरुद्ध संघर्ष करके उसे पार्टी से निलंबित कर दिया गया तथा फेडरेशन के सभी पदों से छुट्टी दे दी गयी।

इसके पहले चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आठवीं कांग्रेस 1956 में हो चुकी थी। इसने एक व्यक्ति के प्रबंधन के स्थान पर उद्यमों में पार्टी को केन्द्रक में रख कर सामूहिक नेतृत्व के साथ साथ व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर जोर दिया। इसके साथ ही फैक्टरियों में मजदूरों की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए नये संस्थाबद्ध तरीके निकालने के लिए प्रयोग किये गये। फैक्टरियों के भीतर मजदूर कांग्रेसों को लागू करने का फैसला किया गया। महान अग्रगामी छलांग के दौरान ''दोहरी हिस्सेदारी'' की व्यवस्था लागू की गयी। इस व्यवस्था के तहत मजदूरों को प्रबंधन में भागीदारी करनी थी और प्रबंधकों को पार्टी कमेटी की निगरानी में उत्पादन क्षेत्र में हिस्सेदारी करनी थी। लेकिन ए.सी.एफ.टी.यू., पार्टी और सरकार के हिस्सों में नौकरशाही इतनी प्रभुत्वकारी स्थिति में आ गयी थी कि ये सारे उपाय महज औपचारिकता बन कर रह जाते थे।

इसके अतिरिक्त, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में संशोधनवाद और देश के भीतर मौजूद पूंजीवादी ताकतें (विशेषतौर पर पार्टी और सरकार के भीतर) मजदूर आंदोलन को भी पूंजीवादी ढर्रे में ले जाने की ओर प्रेरित कर रही थीं।

1961–64 के दौरान एक तरफ माओ विचारधारात्मक राजनीतिक संघर्ष पर जोर दे रहे थे वहीं ए.सी.एफ.टी.यू. के अंदर मौजूद नौकरशाही मजदूरों को भौतिक प्रोत्साहन देने और सिर्फ अपने लिए काम करने को प्रोत्साहन दे रही थी।

हम यहां पर इस दौरान (1961–64) चीन की सरकार द्वारा लागू की जा रही उन आर्थिक नीतियों की चर्चा नहीं कर रहे हैं जो चीन की समाजवादी व्यवस्था को पूंजीवादी ढर्रे पर ले जा रही थीं। यह वर्तमान लेख के विषय वस्तु से बाहर की बात है। लेकिन महान अग्रगामी छलांग के दौरान जो ''राजनीति को कमान में'' रखने का नारा अमल में लाया जा रहा था तथा ''विशेषज्ञों'' को ''लाल'' होने का अभियान चलाया जा रहा था, वह 1961–64 के दौरान उलट दिया गया था। अब इस दौरान उद्यमों के भीतर मुनाफे को लक्ष्य बनाया जा रहा था। उद्यमों के भीतर ट्रेड यूनियनों और पार्टी कमेटियों के प्रभुत्व के स्थान पर प्रबंधकों, पेशेवर कर्मियों और तकनीकीशाहों का प्रभुत्व स्थापित हो गया था।

सांस्कृतिक क्रांति के दौरान ई.एल.व्हील राइट और ब्रूस मैकफार्लेन नामक अर्थशास्त्री जब लगभग 30 उद्यमों में गये थे तो क्रांतिकारी कमेटी के सदस्यों व मजदूरों ने 1961.64 की स्थिति का बयान इस प्रकार किया था :

> ''(1) शंघाई गोदी में, क्रांतिकारी कमेटी के एक सदस्य के अनुसारः
>
> सप्ताह में सिर्फ तीन घंटे किसी भी किस्म के अध्ययन के लिए दिये जाते थे। वास्तव में इन तीन घंटों को तकनीक और संरक्षा के अध्ययन तथा पुरस्कारों के आंकलन में इस्तेमाल किया जाता था। ऐसे पुरस्कार और बोनस प्रबंधन द्वारा लागू किये गये मुख्य उपाय थे ओर इसमें ''काम में मितव्ययता'',''गुणवत्ता'', ''संरक्षा'', ''तार्किक सुझाव'' आदि के लिए मासिक, त्रैमासिक और वार्षिक पुरस्कार शामिल थे। इससे मजदूर, मजदूर के खिलाफ हो जाते थे। प्रबंधक गोदी को स्वतंत्र राज्य बनाये हुए थे जो सिर्फ मुनाफा चाहते थे। उदाहरण के लिए, हम एक अनाज निगम के लिए चावल लादते थे। यदि चावल का बोरा फट जाता था तो हम निगम के अधिकारियों से इसे सीने की मांग करते थे। यदि वे हमसे सुई उधार लेते थे तो सुई की कीमत के बतौर वे हमें प्रति घंटे दो गुना भुगतान करते थे। क्या यही ''जनता की सेवा करना'' था। या, फिर गोदामों को सामानों को इकट्ठा करने के लिए बनाया गया था, और यदि उद्यम उसे समय से नहीं उठाते थे तो हम गोदाम को दूसरे उद्यमों को किराये पर उठा देते थे और पहले वाले सामान को खुले आसमान में छोड़ देते थे, इससे उनकी गुणवत्ता प्रभावित होती थी। सांस्कृतिक क्रांति के पहले अधिकारी सामान्य मजदूरों से दो गुना तनख्वाहें पाते थे। सांस्कृतिक क्रांति के बाद इन अतार्किक वेतनों में कटौती की गयी।
>
> ''(2) शिन्हुआ प्रिण्टिंग हाउस, यांगशा के क्रांतिकारी कमेटी के एक सदस्य ने कहाः
>
> ''1961 और 1963 के बीच उद्यम ने पूंजीवादी प्रबंधन के तरीके इस्तेमाल करने की कोशिश की। औद्योगिक चार्टर जिसे हम अब लिउ शाओ ची का ''सत्तर अनर्थकारी बिंदु'' कहते हैं–एक नियंत्रणकारी शक्ति था। इस दस्तावेज ने उत्पादन को कमान में रखने पर जोर दिया था और निदेशक को पूरी जिम्मेदारी दी गयी थी। नियमावली इंसान को नियंत्रित करती थी न कि इसका उल्टा होता था। इस व्यवस्था का सारतत्व था कि जो ज्यादा उत्पादन करते थे, उनको पुरस्कृत किया जाता था और जो कम पैदा करते थे उन्हें दण्डित किया जाता था। राजनीतिक चेतना पर भरोसा नहीं किया जाता था, और न ही जनसमुदाय की पहलकदमी पर। 1966 में हम इस नतीजे पर पहुंचे कि ''70 अनिष्टकारी बिंदुओं'' को नियंत्रण करने, रोक लगाने, आगे बढ़ाने और धक्का देने के उपाय के बतौर देखा जाना चाहिए। उस समय एक जटिल बोनस प्रणाली थी जिसमें गुणवत्ता, उत्पादकता, संरक्षा, कच्चे मालों की बचत पर पुरस्कार थे तथा कई मीटिंगें होती थीं। मशीन टूटने पर, कम गुणवत्ता का उत्पादन होने पर, निर्धारित कोटा के न पूरा होने पर या मीटिंग में शामिल होने में असफल होने पर जुर्माने ठोंक दिये जाते थे। भौतिक प्रोत्साहन के इस जोर से मजदूर बंट जाते थे। लेकिन यदि मजदूर पैसों पर ही ध्यान देते थे तो भी उत्पादकता में उपलब्धि कोई विशेष नहीं होती थी। परिवहन शाखा में कुछ मजदूरों पर पीसवर्क अंततोगत्वा लागू किया गया, लेकिन हमने पीसवर्क पर काम करने पर इंकार कर दिया और मुख्यतया पुरस्कारों पर काम करते रहे। अब हमने 1966–67 में भौतिक प्रोत्साहनों को किनारे लगा दिया तो प्रबंधन ने फूट डालने के लिए फण्ड देकर जवाबी हमला किया। करीब 100 मजदूरों ने इसे स्वीकार कर लिया और गद्दारों की एक टुकड़ी जो अपने को ''385 ब्रिगेड'' कहती थी, गठित की गयी। हमने संयत्र पर नियंत्रण कर लिया और इस तरह के मोटे भुगतान को रोक दिया। 1966 के अंत में हमारा विरोध करने के लिए करीब 300 मजदूर हड़ताल पर चले गये। हम अपनी जगह पर डटे रहे तथा बाहर के क्रांतिकारी विद्रोहियों की मदद से अंततोगत्वा हम काम पर आ गये।'' ("The Chinese Road To Socialism" by E.L. Wheel Wright and Bruce Mcfarlane Monthly Review Press New York, 1970, Page No.69-70, अनुवाद हमारा)

इस दौरान ए.सी.एफ.टी.यू.और ट्रेड यूनियनों के भीतर नौकरशाही और मजबूत हो गयी थी। अक्सर ट्रेड यूनियनों के नेता प्रबंधन के साथ मिलकर मजदूरों को निजी लाभ के लिए प्रेरित करते थे और दबाव बनाते थे। ट्रेड यूनियनें मजदूरों की कांग्रेस बुलाने की भी जहमत नहीं उठाती थीं। अक्सर कार्यकर्ताओं के विस्तारित सम्मेलन को ही नियमित मजदूरों की कांग्रेस मान लिया जाता था।

ए.सी.एफ.टी.यू.और ट्रेड यूनियनें सांस्कृतिक क्रांति के पहले 'उत्पादन कमान में ' और 'मुनाफा कमान में' से संचालित होती थीं। माओ की 'राजनीति कमान में' रखने की कार्यदिशा के बारे में ए.सी.एफ.टी.यू.के मुखपत्र 'मजदूरों का दैनिक' ने 19 सितम्बर, 1965 के अपने सम्पादकीय में यह लिखा :

> ''ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता हैं जो एक तरफ राजनीति पर और पहले चार पर जोर देने और दूसरी तरफ पेशागत कार्य के बीच विरोध देखते हैऋ वे यह नहीं समझते कि पेशागत कार्य राजनीति की सेवा करता है। कि यदि राजनीति को नजरअंदाज किया जाता है तो गलत दिशा ले ली जाती है ... ... कुछ कहते हैं कि राजनीति पर जोर देना और पहले चार को कायम रखने की बात महज खोखली बात है, वह पेशेवर कार्य की तरह नहीं है। ... ... कुछ कहते हैं कि उत्पादन में अच्छी उपलब्धि सही राजनीतिक विचारों को अभिव्यक्त करती है।'' (Quoted in Trade Unions in China, by Lee Lai To, P.106, अनुवाद हमारा)

1965 की गर्मियों तक इस समाचार पत्र में ट्रेड यूनियन गतिविधियों के कुछ लेख जो प्रकाशित हुए थे वे मुख्यतया मजदूरों के कल्याण और स्वास्थ्य के सम्बंध में थे। उनमें राजनीति के बारे में कुछ नहीं था।

ऐसे समय में, जब समाजवादी शिक्षा आंदोलन जोरों से समूचे देश में चल रहा था, जब ''राजनीति को कमान में'' रखने और 'मुनाफे व उत्पादन को कमान में रखने' के बीच संघर्ष अत्यधिक तीखा था, उस समय मजदूरों के दैनिक द्वारा राजनीति से विरक्ति की बात भी एक राजनीति थी। यह मजदूरों के बीच पूंजीवादी राजनीति का परिचायक थी।

कुल मिलाकर महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के पहले तक ए.सी.एफ.टी.यू.व ट्रेड यूनियनों के शीर्ष नेतृत्व का एक हिस्सा संशोधनवादी हो चुका था और पार्टी के भीतर पूंजीवादी पथगामियों के हिस्से का प्रतिनिधित्व करता था।

लेकिन ए.सी.एफ.टी.यू. के अंदर दो कार्यदिशाओं के बीच संघर्ष निरंतर चल रहा था। 27 अप्रैल 1966 के जन दैनिक और मजदूरों के दैनिक ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें प्रांतीय, म्युनिसिपल और क्षेत्रीय ट्रेड यूनियनों के अध्यक्षों का राष्ट्रीय सम्मेलन और ए.सी.एफ. टी.यू. की आठवीं कार्यकारी कमेटी के छठे सत्र का जिक्र करते हुए कहा गया कि इन दोनों सम्मेलनों में ट्रेड यूनियन नेताओं की राय है कि :

> ''... ... चीन में समाजवादी क्रांति और समाजवादी निर्माण की आवश्यकताओं के अनुरूप तथा पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के नेतृत्वकारी कामरेडों के निदेशों की रोशनी में भी ट्रेड यूनियनों को माओ त्से तुंग के विचारों के महान लाल झण्डे को ऊपर उठाये रखना होगा, वर्ग–संघर्ष को एक उत्तोलक के तौर पर लेने, राजनीति को प्रथम स्थान देने, जनमुक्ति सेना और ताचिंग तेल क्षेत्र से बड़े पैमाने पर सीखने और सेना निर्माण के बारे में माओ के सिद्धान्त को इस्तेमाल करते हुए चीनी मजदूरों की कतारों को एक बड़ी औद्योगिक सेना में बदल देने, जो सर्वहारा, क्रांतिकारी और भिड़ने की क्षमता में मजबूत हो तथा ट्रेड यूनियनों को माओ त्से तुंग के विचारों के लचीले अध्ययन और इस्तेमाल के स्कूल में बदलने का करना होगा।'' (Quoted in Trade Unions in China by Lee Lai To, P-107, अनुवाद हमारा)

मजदूरों के दैनिक, जो ए.सी.एफ.टी.यू. का मुखपत्र था, के भीतर दो कार्य–दिशाओं के बीच संघर्ष की अभिव्यक्ति उपरोक्त दोनों उद्धरणों में देखी जा सकती है।

III
महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के दौरान ए.सी.एफ.टी.यू. और ट्रेड यूनियनें

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आठवीं केन्द्रीय कमेटी के 11वें प्लेनम में महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के दिशा निर्देश के लिए 16 बिंदुओं वाला सरकुलर स्वीकृत किया गया। 17 नवम्बर 1966 को सांस्कृतिक क्रांति ग्रुप ने क्रांतिकारी मजदूरों और रेड गार्डों के साथ एक मीटिंग करके फैक्टरियों के अंदर सांस्कृतिक क्रांति के बारे में 12 बिंदुओं का एक मसौदा तैयार किया। इन 12 बिंदुओं में सांस्कृतिक क्रांति को लागू करने में मजदूर वर्ग को एक नेतृत्वकारी शक्ति के बतौर पेश किया गया। शंघाई के मजदूर विद्रोही वहां के मेयर व उसके सहयोगियों के विरुद्ध शिकायत करने के लिए पेकिंग के लिए रेलगाड़ी से चले। लेकिन उनको आतिंग में रोक लिया गया। मेयर ने इन क्रांतिकारी मजदूरों को प्रति क्रांतिकारी घोषित करते हुए इनकी गतिविधियों के बारे में पेकिंग में संदेश भेजा। परिणाम स्वरूप सांस्कृतिक क्रांति ग्रुप ने परिस्थिति से निपटने के लिए चांग चुंग चियाओ को भेजा। इसके बाद 9 दिसम्बर, 1966 को पार्टी ने ''क्रांति पर पकड़ बनाये रखने और उत्पादन को बढ़ाने सम्बंधी 10 नियमों'' को जारी किया।

दिसम्बर, 1966 में ही क्रांतिकारी मजदूरों के प्रतिनिधियों की श्रम मंत्रालय और ए.सी.एफ.टी.यू.के साथ उनकी मांगों के संबंध में कई वार्ताएं हुईं। ए.सी.एफ.टी.यू. के शीर्ष में बैठे पूंजीवादी पथगामियों के विरुद्ध संघर्ष करने और व्यापक मजदूरों को गोलबंद करने के उद्देश्य से सांस्कृतिक क्रांति को संचालित करने वाले ग्रुप ने अखिल चीन लाल मजदूर विद्रोहियों की कोर (All China Red Worker Rebels General corps) का गठन किया। इस संगठन के सदस्यों में अस्थायी और ठेके के मजदूर थे जिनके काम की कोई सुरक्षा नहीं थी और वे ए.सी.एफ. टी.यू. की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं से वंचित थे। अब श्रम मंत्रालय और ए.सी.एफ.टी.यू. के पूंजीवादी पथगामियों के विरुद्ध संघर्ष तेज हो गया। लिऊ शाओ ची, देंग शियाओ पिंग और पूंजीवादी पथगामियों का साथ देने के लिए 3 जनवरी, 1967 को ए.सी.एफ.टी.यू.के शीर्ष नेतृत्व के विरुद्ध प्रदर्शन हुए।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि क्रांतिकारी मजदूरों ने ए.सी.एफ.टी.यू.के केन्द्रीय नेतृत्व के पूंजीवादी पथगामियों के विरुद्ध संघर्ष इसलिए छेड़ दिया था क्योंकि वे ट्रेड यूनियनों के भीतर राजनीति को कमान में रखने की कार्यदिशा पर नहीं चल रहे थे। वे ट्रेड यूनियनों को उत्पादन को कमान में रखकर चला रहे थे। ए.सी.एफ.टी.यू. वर्ग–संघर्ष को कुंजीभूत कड़ी के बतौर नहीं स्वीकार कर रही थी।

ए.सी.एफ.टी.यू.के पूंजीवादी पथगामियों के विरुद्ध संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए तथा पूंजीवादी पथगामियों द्वारा क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं एवं क्रांतिकारी मजदूरों पर दमन के विरुद्ध मुकाबला करने के लिए एक तरफ तो जन मुक्तिसेना को वामपंथियों का पक्ष लेने के लिए सर्वहारा वर्ग के सदरमुकाम ने निर्देश दिया, वहीं दूसरी तरफ, पेकिंग में मार्च, 1967 में क्रांतिकारी मजदूरों के प्रतिनिधियों का प्रथम सम्मेलन आयोजित किया गया। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने 18 मार्च, 1967 के एक पत्र में सभी क्रांतिकारी मजदूरों, स्टाफ व कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया गया कि जब तक पेकिंग के क्रांतिकारी मजदूरों की प्रतिनिधि कांग्रेस नहीं हो जाती तब तक इस सम्मेलन को सर्वोच्च प्राधिकार प्राप्त होगा। इस प्रकार, ए.सी.एफ.टी.यू.के पूंजीवादी पथगामियों को शिकस्त देने के बाद क्रांतिकारी मजदूरों द्वारा ट्रेड यूनियनों को क्रांतिकारी आधार पर संगठित करने का यह पहला प्रयास था। मार्च 1967 से लेकर अप्रैल 1969 के बीच तेरह प्रांतों में क्रांतिकारी मजदूरों की प्रतिनिधि कांग्रसें या तो हो चुकी थी या प्रांतीय स्तर पर उनकी तैयारी कमेटियां बन चुकी थीं।

प्रांतीय स्तर पर गठित इन तेरह क्रांतिकारी मजदूरों की प्रतिनिधि कांग्रेसों के अलावा कम से कम 36 कांग्रेसें काउन्टी और शहर स्तर पर संगठित हो चुकी थीं। इनके अलावा व्यापार, वित्त, संचार और परिवहन के क्षेत्र में 5 कांग्रेसें हो चुकी थीं। बुनियादी स्तर पर क्रांतिकारी मजदूरों की प्रतिनिधि कांग्रेसें आयोजित की गयीं। माओ ने व्यापक क्रांतिकारी मोर्चे के गठन का आह्वान किया था और हर जगह ये गठित हो रहे थे जिसमें क्रांतिकारी मजदूरों की अहम भूमिका थी।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के दौरान मजदूर वर्ग वस्तुतः जगह–जगह नेतृत्वकारी भूमिका में आ गया था। मजदूरों की प्रचार टीमें बना कर छात्रों के बीच भेजी गयीं। इस दौरान कुछ अराजकतावादी रुझान व अनुशासनहीनता की घटनायें बढ़ीं। इसके लिए फैक्टरियों और खदानों में क्रांतिकारी अनुशासन लागू करने और अराजकतावाद को समाप्त करने के लिए व्यापक जन आंदोलन चलाया गया। मजदूरों को माओ त्से तुंग विचारधाारा से शिक्षित करने, क्रांतिकारी अनुशासन लागू करने और उत्पादन बढ़ाने के लिए यह आवश्यक था कि मजदूरों की ट्रेड यूनियनों को फिर से व्यापक पैमाने पर स्थापित किया जाय। मजदूरों को माओ त्से तुंग विचारधारा से शिक्षित करने के लिए ''7 मई स्कूल'' की स्थापना की गयी। इसमें ए.सी.एफ.टी.यू. के कार्यकर्ता जो अपनी पिछली गलती स्वीकार कर चुके थे, उन्हें फिर से शिक्षित करने और उन्हें फिर से स्थापित करने के लिए कार्यक्रम शामिल थे।

जनवरी, 1973 से ट्रेड यूनियनों को बड़े पैमाने पर पुनर्गठित करने की प्रक्रिया तेज हो गयी। क्रांतिकारी कमेटियों, पार्टी कमेटियों, क्रांतिकारी मजदूरों की प्रतिनिधि कांग्रेसों और आदर्श मजदूरों को लेकर स्थानीय पैमाने पर बुनियादी ट्रेड यूनियनों को पुनर्गठित करने के

लिए तैयारी कमेटियां गठित की गयीं। ये तैयारी कमेटियां स्थानीय पैमाने पर ट्रेड यूनियन कांग्रेसों को आयोजित करने के लिए बनायी गयी थीं। इन ट्रेड यूनियन कांग्रेसों के प्रतिनिधियों के चुनाव में विचारधारात्मक तौर पर सही पक्ष लेने वाले मजदूरों, महिलाओं एवं नौजवानों पर विशेष जोर दिया था।

इन स्थानीय ट्रेड यूनियन कांग्रेसों को आयोजित करने में शंघाई और पेकिंग सबसे पहले थे। 1973 के अंत तक सभी 29 प्रांतों में प्रांतीय स्तर पर ट्रेड यूनियनें गठित कर ली गयीं थीं। इन ट्रेड यूनियन कांग्रेसों में ट्रेड यूनियनों के लिए यह दृष्टिकोण निर्धारित किया कि वे वर्ग संघर्ष और दो कार्यदिशाओं के बीच संघर्ष पर दृढ़ता से कायम रहें, और पूंजीपति वर्ग एवं संशोधनवाद की आलोचना के लिए मजदूरों को गोलबंद करें तथा सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के अंतर्गत क्रांति को जारी रखने पर कायम रहें।

इस प्रकार, हम देख सकते हैं कि सांस्कृतिक क्रांति के दौरान जहां ए.सी.एफ.टी.यू. के पूंजीवादी सदर मुकाम को ध्वस्त करके क्रांतिकारी मजदूरों ने ट्रेड यूनियनों में एक नयी क्रांतिकारी चेतना को बढ़ाने में योगदान दिया, वहीं उन्होंने फिर से नयी ट्रेड यूनियनें खड़ी करने, उन्हें पुनर्गठित करने में समाज में चौतरफा सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को लागू करने में योगदान किया।

कई पूंजीवादी व संशोधनवादी हलकों में इस बात की आलोचना की जाती है कि चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के दौरान पार्टी और ट्रेड यूनियनों को ध्वस्त कर दिया गया, कि रेड गार्ड व क्रांतिकारी कमेटियां और पार्टी व ट्रेड यूनियनों का स्थान ले चुके थे। यह सोचने की बात है कि जब पार्टी में दो सदर मुकाम हों–एक पूंजीवादी सदर मुकाम और दूसरा सर्वहारा सदर मुकाम तो पूंजीवादी सदर मुकाम को नेस्तनाबूद किये बगैर कैसे सर्वहारा वर्ग की पार्टी अपनी शुद्धता बनाये रख सकती है और पूंजीवादी पुनर्स्थापना को कैसे रोक सकती है? इसी प्रकार जब ए.सी.एफ.टी.यू. भी दो सदर मुकामों में बंट चुका हो तो बगैर पूंजीवादी सदर मुकाम को ध्वस्त किये ट्रेड यूनियनें कैसे समाजवादी क्रांति व समाजवादी निर्माण के कार्यभारों को पूरा कर सकती हैं। इसका एक ही उत्तर है कि बगैर पूंजीवादी सदर मुकाम को ध्वस्त किये इन कार्यभारों को अंजाम नहीं दिया जा सकता।

अगर सरसरी नजर से पीछे की ओर नजर डाली जाय तो चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने माओ के नेतृत्व में शुरू से ही विचारधारात्मक और राजनीतिक संघर्ष को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। चाहे वह नव–जनवादी क्रांति का दौर रहा हो या चाहे समाजवाद में सक्रमण का दौर रहा हो या समाजवादी क्रांति व समाजवाद के निर्माण का दौर रहा हो। इस विचारधारात्मक व राजनीतिक संघर्ष का सबसे अधिक तीक्ष्ण प्रतिबिम्बन पार्टी के बाद ए.सी.एफ.टी.यू. के बीच दिखाई पड़ता है। 1949 के बाद तो यह और ज्यादा तीक्ष्णता के साथ संघर्ष रहा है।

इस विचारधारात्मक और राजनीतिक संघर्ष में पहले पूंजीवादी व दक्षिणपंथी भटकावों के विरुद्ध संघर्ष रहा है। बाद में महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के दौरान दो कार्यदिशाओं, दो रास्तों के बीच निर्णायक संघर्ष में तब्दील हो गया। इसलिए महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। जैसा कि कुछ पूंजीवादी बुद्धिजीवी, पूंजीपतियों के कलम घिस्सू चाकर या संशोधनवादी समझते या प्रचारित करते हैं। यह चीनी समाज के भीतर चल रहे वर्ग संघर्ष और पार्टी व ए.सी.एफ.टी.यू. जैसे जन संगठनों में चल रहे विचारधारात्मक–राजनीतिक संघर्ष का ही जारी व उच्चतर रूप था।

माओ ने फरवरी, 1967 में कहा था :

> 'अतीत में हमने ग्रामीण क्षेत्रों में, फैक्टरियों में, सांस्कृतिक क्षेत्र में संघर्ष छेड़े और हमने समाजवादी शिक्षा आंदोलन चलाया। लेकिन ये सभी समस्या को हल करने में असफल रहे, क्योंकि हम खुले तौर पर, चौतरफा तौर पर व नीचे से अपने काले पहलू का पर्दाफाश करने के लिए व्यापक जन समुदाय को जागृत करने के लिए कोई रूप, कोई तरीका नहीं पा सके थे।'

और यह रूप महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति का था।

इस महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के दौरान क्रांतिकारी मजदूरों सहित व्यापक जन समुदाय की पहलकदमी खुली। इसमें बडे पैमाने पर जन–दिशा पर अमल किया गया। ए.सी.एफ.टी.यू.के पूंजीवादी सदर मुकाम को ध्वस्त करने तथा ट्रेड यूनियनों के नेताओं के भीतर व्याप्त पूंजीवादी दृष्टिकोण को समाप्त करने के लिए व्यापक जन आंदोलनों के रूप का इस्तेमाल किया गया। इस दौरान ए.सी.एफ.टी.यू. के भीतर पहले से चले आ रहे दो कार्यदिशाओं के बीच के संघर्ष को और नयी ऊंचाई प्रदान की। इसमें ''जनता से जनता को'' की कार्यदिशा को समूचे देश के पैमाने पर व्यापक तौर पर इस्तेमाल किया गया। सर्वहारा वर्ग के विश्व दृष्टिकोण पर तथा पूंजीवादी विश्व दृष्टिकोण के विरुद्ध विभिन्न आयामों से बहसें की गयीं। पहले से चली आ रही बहसों को सार्वजनिक तौर पर व्यापक मजदूर आबादी व जन समुदाय के बीच बहस का दायरा बना दिया गया।

इस लेख का दायरा महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के विविध पक्षों की चर्चा करना नहीं हैं इसे हम लाल सलाम के पहले के किसी अंक में कर चुके हैं।

यहां यह रेखांकित करना है कि पार्टी या ए.सी.एफ.टी.यू. के भीतर विचारधारात्मक–राजनीतिक संघर्ष सर्वोपरि महत्व देकर चलाया गया जिसकी चरम अभिव्यक्ति महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के दौरान हुई। दूसरा, हर विचारधारात्मक –राजनीतिक संघर्ष के दौरान जन–दिशा पर अमल किया गया।

तीसरे, समूचे सांस्कृतिक क्रांति के दौरान व्यापक संयुक्त मोर्चे को गठित करने पर जोर दिया गया। व्यापक क्रांतिकारी संश्रय (Grand revolutionary Alliance) कायम करने का नारा देकर थोड़े से प्रतिक्रियावादी व पूंजीवादी पथगामियों को अलग–थलग करने की कार्रवाई सफलतापूर्वक अंजाम दी गयी।

चौथे, आलोचना और आत्म–आलोचना के तरीके को व्यापक तौर पर इस्तेमाल किया गया। व्यापक जन समुदाय के बीच में पूंजीवादी पथगामियों की आलोचना की जाती थी और उन्हें सबके सामने अपनी आत्म–आलोचना करनी पड़ती थी। इस प्रक्रिया में अच्छी खासी संख्या में लोगों को अपने रूपान्तरण का मौका मिल जाता था। एकता–संघर्ष–रूपान्तरण की प्रक्रिया के दौरान मुट्ठीभर पूंजीवादी पथगामी ही इससे डरते थे और वे इसमें शामिल नहीं होते थे।

संक्षेप में, ए.सी.एफ.टी.यू. के भीतर पूंजीवादी पथगामियों के विरुद्ध संघर्ष को आगे बढ़ा कर, क्रांतिकारी मजदूरों ने पार्टी की मदद से ट्रेड यूनियनों को पुनर्गठित करने में भूमिका निभायी और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को जीवन के हर क्षेत्र में लागू करने में पार्टी की मदद की।

चीन के ट्रेड यूनियन आंदोलन के सार रूप में ये कुछ महत्वपूर्ण सबक हैं।